स्वच्छ भारत, स्वच्छ विद्यालय अभियान

गांधी तेरे पथ पर

गांधी की क्या बात करूँ, गांधी उदास हैं,
वे जूझ रहे तुमसे और बद-हवास हैं।

गंदगी ही गंदगी बाप रे, कूड़े का ढेर है,
ये भी कोई रोग, या ऊपर का खेल है।

गंदी गलियाँ और नाले सता रहे हैं,
खा-खा के पान थूकने वाले गंदगी फैला रहे हैं।

चुप हैं, व्यंग्य में, थोड़े तंग गांधी हैं।
अब उनके रास्तों से थोड़ा दंग आदमी है।

जिससे भी मिले गांधी, आदर से मिले हैं,
दौड़कर ज्ञान के सागर से मिले हैं।

घर-घर में जा रहा एक ही संदेश है,
ये हमारा देश, हमारे पूर्वज की देन है,
इसे साफ़ रखना हमारा कर्तव्य है,
आखिर ये तो अपना ही प्रिय, एक ही तो देश है।

गांधी तेरे कदमों पर
आ चलें हम झुका के सर।

गाँव-गाँव में, विद्यालयों में स्वच्छ शौचालय हैं,
सेहत और तंदुरुस्ती के सब रखवाले हैं,
उसके आस-पास ही कहीं अपने सपनों का विद्यालय है।

दूर उस गाँव में देख,
एक नन्ही परी के सपने हैं,
उसका भी मन का महल विद्यालय से ही तो है।

गांधी तेरे कदमों पर
आ चले हम झुका के सर।

हर मोह का, माया का और दर्द का
हमने इलाज पाया है।

आ चलें हम स्वच्छता फैलाएँ
आखिर ये वही तो भारत है, जिससे हमने दिल लगाया है।

–Tanessa Puri

1 भूल गया है क्यों इनसान

पठन से पूर्व

हम सब एक ही ईश्वर की संतान हैं। मानव-मानव में कोई मूलभूत अंतर नहीं है। प्रकृति की व्यवस्था को देखें, तो वहाँ भी हमें एकरूपता मिलती है, किंतु हमने कृत्रिम दीवारें खड़ी कर दी हैं। मनुष्य इस कृत्रिमता के कारण अनेक प्रकार के दुख भोग रहा है। अतः हमें इस सीमित दायरे से बाहर निकलने की आवश्यकता है।

पाठ-परिचय

डॉ. हरिवंशराय बच्चन ने अपनी कविता के माध्यम से मनुष्यों को भेदभाव न करने की प्रेरणा दी है। प्रकृति के विभिन्न उपादानों से हमें सीख लेनी चाहिए कि सभी मनुष्य इस धरती की ही संतान हैं। देश, जाति, धर्म, संप्रदाय अथवा धनी-निर्धन के आधार पर मानव-मानव के बीच दीवार खड़ी करना हमारी सबसे बड़ी भूल है।

चर्चा करें

बच्चों से पूछें कि वे मानव-मानव में क्या अंतर देखते हैं। अमीर-गरीब, ऊँच-नीच जैसी कौन-कौन सी बाधाएँ मनुष्यों को एक-दूसरे से अलग करती हैं। भारतीय परंपरा में वसुधैव कुटुंबकम् के महत्त्व को समझाएँ। मनुष्यों के बीच की दूरियाँ समाप्त करने के उपायों पर चर्चा करें।

भूल गया है क्यों इनसान।
सबकी है मिट्टी की काया,
सब पर नभ की निर्मल छाया,
यहाँ नहीं कोई आया है,
ले विशेष वरदान।
भूल गया है क्यों इनसान।

धरती ने मानव उपजाए,
मानव ने ही देश बनाए,
बहु देशों में बसी हुई है,
एक धरा-संतान।
भूल गया है क्यों इनसान।

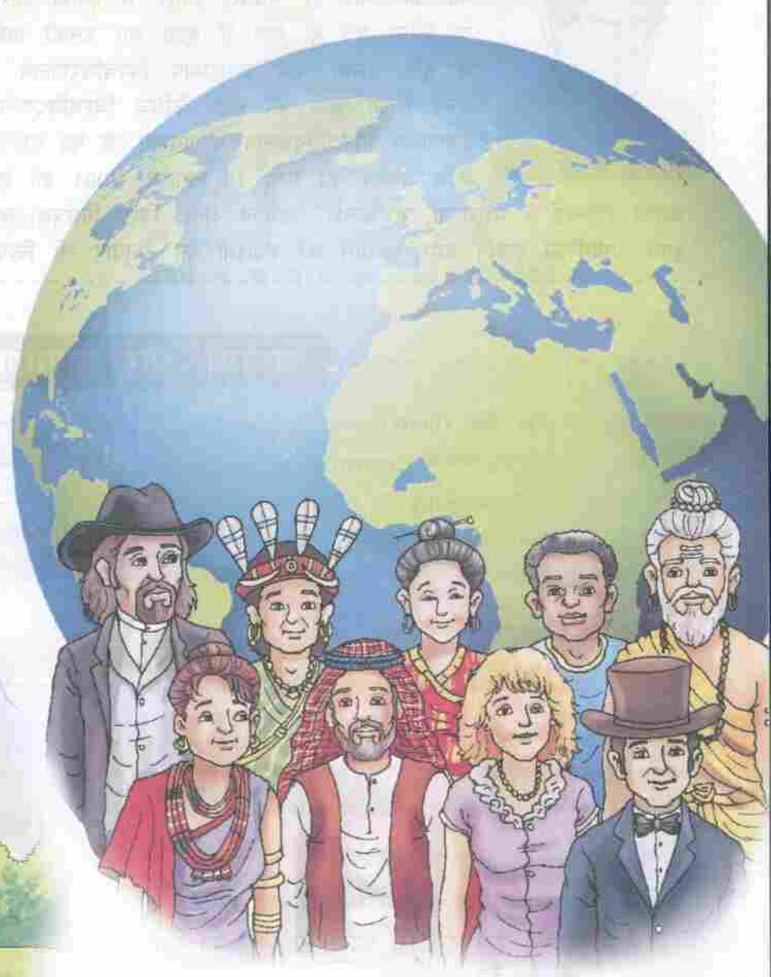

देश अलग हैं, देश अलग हों,
वेश अलग हैं, वेश अलग हों,
मानवता से लेकिन,
अलग न अंतर-प्राण।
भूल गया है क्यों इनसान।

–डॉ. हरिवंशराय बच्चन

मौखिक प्रश्न

1. इस कविता के रचयिता कौन हैं?
2. कवि बार-बार यह क्यों कह रहे हैं–'भूल गया है क्यों इनसान?'
3. 'सब पर नभ की निर्मल छाया' का क्या अर्थ है?
4. 'मानव ने ही देश बनाए' द्वारा कवि क्या कहना चाहता है?

कवि-परिचय

डॉ. हरिवंशराय बच्चन : इनका मूल नाम हरिवंशराय श्रीवास्तव था। 'बच्चन' उनके बचपन का नाम था। 27 नवंबर, 1907 में इनका जन्म इलाहाबाद में श्री प्रताप नारायण श्रीवास्तव के ज्येष्ठ पुत्र के रूप में हुआ था। उनकी प्रारंभिक शिक्षा इलाहाबाद की कायस्थ पाठशाला में हुई। उसके बाद इलाहाबाद विश्वविद्यालय और बनारस हिंदू विश्वविद्यालय से इन्होंने उच्च शिक्षा प्राप्त की तथा कैंब्रिज विश्वविद्यालय से डॉक्टरेट की उपाधि प्राप्त की। इन्होंने इलाहाबाद विश्वविद्यालय में प्रवक्ता के पद पर अध्यापन-कार्य किया। 'पद्मभूषण' से सम्मानित कवि बच्चन की मृत्यु 18 जनवरी, 2003 को हुई।

प्रमुख रचनाएँ : मधुशाला, मधुकलश, आकुल अंतर, निशा निमंत्रण, क्या भूलूँ, क्या याद करूँ, बसेरे से दूर आदि। इनके अतिरिक्त इन्होंने उमर खय्याम की रुबाइयों का अनुवाद भी किया।

शब्दार्थ और टिप्पणियाँ

काया	– देह, शरीर (body)	बहु	– अनेक (many)
इनसान	– मनुष्य, आदमी (human)	धरा	– धरती, भूमि (earth)
निर्मल	– स्वच्छ (clean)	वेश	– पहनावा (dress)
वरदान	– ईश्वर की देन (boon)	अंतर	– हृदय (heart)

अभ्यास

पाठ से प्रश्न — Comprehension based on Lesson

1. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लिखिए।
   (क) मानवों के बीच मौलिक समानता क्या है?
   (ख) 'सबकी है मिट्टी की काया' से कवि का क्या अभिप्राय है?
   (ग) कवि मनुष्यों को कौन-सी बात भूल जाने की याद दिला रहा है?
   (घ) 'धरती ने मानव उपजाए' से कवि क्या कहना चाहता है?
   (ङ) कविता का मूलभाव क्या है?
   (च) कवि ऐसा क्यों कहता है कि यहाँ कोई विशेष वरदान लेकर नहीं आया है?

2. निम्नलिखित प्रश्नों के सही उत्तर पर सही (✓) का निशान लगाइए।
   (क) कवि किसके बारे में कह रहा है कि वह भूल गया है?
   (i) स्वयं के (ii) महिलाओं के
   (iii) इनसानों के (iv) जानवरों के
   (ख) देश किसने बनाए हैं?
   (i) ईश्वर ने (ii) कौम ने
   (iii) मानव ने (iv) ज़मीन ने
   (ग) सभी मनुष्यों पर किसकी निर्मल छाया विद्यमान है?
   (i) पेड़ों की (ii) घरों की
   (iii) नभ की (iv) धुंध की
   (घ) देश-वेश के अलग होने पर भी क्या अलग नहीं है?
   (i) शहर (ii) मानवता
   (iii) धरती (iv) गाँव
   (ङ) हम सबकी काया किससे बनी है?
   (i) पत्थर से (ii) मिट्टी से
   (iii) धातु से (iv) चाँदी से
3. निम्नलिखित पंक्तियों का आशय स्पष्ट कीजिए।
   (क) धरती ने मानव उपजाए,
   मानव ने ही देश बनाए,
   बहु देशों में बसी हुई है, एक धरा संतान।
   (ख) देश अलग हैं, देश अलग हों,
   वेश अलग हैं, वेश अलग हों,
   मानवता से लेकिन, अलग न अंतर-प्राण।

शब्द-कौशल — Vocabulary

1. दो-दो पर्यायवाची शब्द लिखिए।
   इनसान, नभ, धरा, निर्मल, काया।
2. विलोम शब्द लिखिए।
   वरदान × ..... | निर्मल × .....
   विशेष × ..... | छाया × .....
3. नीचे दिए गए शब्दों के तुकांत शब्द लिखिए।
   जैसे: काया – छाया।
   इनसान – ..... | बनाए – .....
   संतान – ..... | देश – .....

भाषा-कौशल — Language Skills

प्रस्तुत कविता में 'संतान' और 'अंतर' शब्द आए हैं। पहले इन शब्दों को 'सन्तान' और 'अन्तर' इस प्रकार लिखा जाता था। अब इनके लेखन में अंतर आ गया है।

पूर्व रूप	वर्तमान मानक रूप
अन्ध	अंध
बिन्दु	बिंदु
निरन्तर	निरंतर
सन्देश	संदेश
चञ्चल	चंचल
मञ्जन	मंजन
प्रारम्भ	प्रारंभ
सङ्गीत	संगीत

(i) आज के बदलते परिवेश में टंकण और कंप्यूटर आदि यंत्रों के अत्यधिक प्रयोग के कारण सुविधा की दृष्टि से वर्गों के पंचम वर्ण के स्थान पर अनुस्वार (ं) का प्रयोग किया जाता है।

इन उदाहरणों को ध्यान से देखिए–

कवर्ग–क ख ग घ ङ (इनमें 'ङ' पंचम वर्ण है।)

पूर्व रूप	वर्तमान मानक रूप
अङ्क/अङ्क	अंक
गङ्गा/गङ्गा	गंगा
रङ्ग/रङ्ग	रंग
पङ्ख/पंङ्ख	पंख
शङ्ख/शंङ्ख	शंख
पङ्कज/पङ्कज	पंकज
कङ्घा/कङ्घा	कंघा
सङ्घ/सङ्घ	संघ
पतङ्ग/पतङ्ग	पतंग

चवर्ग–च छ ज झ ञ (इनमें 'ञ' पंचम वर्ण है।)

पूर्व रूप	वर्तमान मानक रूप
अञ्चल/अञ्चल	अंचल
चञ्चल/चञ्चल	चंचल
मञ्जन/मञ्जन	मंजन
चञ्चु/चञ्चु	चंचु
पञ्छी/पञ्छी	पंछी
मञ्च/मञ्च	मंच

टवर्ग–ट ठ ड ढ ण (इनमें 'ण' पंचम वर्ण है।)

पूर्व रूप	वर्तमान मानक रूप
अण्डा	अंडा
घण्टा	घंटा
कण्ठ	कंठ
मण्डप	मंडप
मण्डल	मंडल
झण्डा	झंडा

तवर्ग–त थ द ध न (इनमें 'न' पंचम वर्ण है।)

पूर्व रूप	वर्तमान मानक रूप
अन्दर	अंदर
बन्दर	बंदर
मन्दिर	मंदिर
आनन्द	आनंद
बन्धन	बंधन
परन्तु	परंतु

पवर्ग–प फ ब भ म (इनमें 'म' पंचम वर्ण है।)

पूर्व रूप	वर्तमान मानक रूप
कम्बल	कंबल
कम्पन	कंपन
खम्भा	खंभा
सम्बल	संबल
सम्भव	संभव
रम्भा	रंभा

विशेष– ध्यान दें कि **सम्बन्ध/संबंध** एक ऐसा शब्द है जिसमें पवर्ग और तवर्ग के दोनों नियम लागू होते हैं।

(ii) जब एक साथ दो पंचम वर्ण आते हैं, तो अनुस्वार का प्रयोग नहीं होता, अपितु दोनों पंचम वर्ण साथ-साथ लिखे जाते हैं; जैसे–जन्म, अन्न, सम्मान, वाङ्मय, अक्षुण्ण आदि।

(iii) य, व, ह से पहले पंचम वर्ण ही लिखे जाते हैं, अनुस्वार का प्रयोग नहीं होता; जैसे– अन्य, वन्य, अरण्य, कण्व, समन्वय, कन्हैया आदि।

(iv) श और स से पूर्व अनुस्वार का ही प्रयोग होता है; जैसे– अंश, वंश, कंस, हंस, मंशा आदि।

इन शब्दों का उच्चारण करते समय न् की अस्फुट ध्वनि सुनाई पड़ती है, किंतु इन्हें न् से नहीं लिखा जा सकता।

(v) सम् उपसर्गयुक्त शब्दों में म् के स्थान पर अनुस्वार ही लिखा जाता है; जैसे–

सम् + सार = संसार
सम् + हार = संहार
सम् + विधान = संविधान
सम् + रक्षक = संरक्षक
सम् + वाद = संवाद
सम् + हिता = संहिता
सम् + शय = संशय
सम् + लग्न = संलग्न

ध्यान देने योग्य बात यह है कि उपर्युक्त सभी शब्द मूल रूप से संस्कृत के होने के कारण तत्सम शब्द हैं।

(vi) **अनुनासिक (ँ) के स्थान पर अनुस्वार (ं) लिखने का नियम**– शिरोरेखा के ऊपर वाले मात्रायुक्त वर्णों में अनुनासिक यानी चंद्रबिंदु, अनुस्वार के रूप में (ं) लिखा जाता है। जैसे–मैं, में, हैं, नहीं, क्यों, क्योंकि, सिंचाई इत्यादि किंतु इनका उच्चारण अनुनासिक ही रहेगा।

जहाँ शिरोरेखा वाली मात्राएँ नहीं हैं, ऐसे वर्णों पर चंद्रबिंदु के उपयोग की आवश्यकता है, जैसे–माँ, चाँद, आँधी, आँगन, ऊँट, पूँछ इत्यादि।

हंस (एक पक्षी) और हँस (हँसी, हँसना) के आदर्श उच्चारण द्वारा अनुस्वार और अनुनासिक का अंतर स्पष्ट किया जा सकता है।

1. निम्नलिखित शब्दों में अनुस्वार अथवा अनुनासिक चिह्न लगाइए।

कस, पहुच, मच, गाव, गाडीव, सचार, कुआ, सवाद, पख, हसी।

विसर्ग-चिह्न (:)

इस चिह्न का प्रयोग आजकल लुप्त हो चला है। मुख्य रूप से संस्कृत के कुछ तत्सम शब्दों के साथ ही इसका प्रचलन है। जैसे–अतः, प्रातः, पुनः, दुःखानुभूति। किंतु 'दुःख' को आजकल 'सुख' के समान 'दुख' लिखा जाने लगा है। छः के स्थान पर छह लिखा जाता है।

2. दिए गए शब्दों में उचित स्थान पर विसर्ग-चिह्न लगाइए।

परित, नम, फलत, स्वभावत, मूलत

रचनात्मक अभिव्यक्ति Creative Activities

1. कल्पना कीजिए कि यह विशाल धरती अनेक देशों में विभक्त नहीं है। हम सब अपनी इच्छानुसार यहाँ-वहाँ सब जगह आते-जाते रहते हैं। ऐसी स्थिति में मानव-समाज का ढाँचा किस प्रकार का होगा? सोचकर लिखिए।
2. आप जानते हैं कि हम सबको एक ही ईश्वर ने बनाया है। फिर भी हम सब आपस में एक-दूसरे के प्रति भेद-भाव रखते हैं। इस भेद-भाव के कारण क्या हैं? इस पर विचार करते हुए एक लघु लेख लिखिए।

खेल-खेल में Fun Time

विनय महाजन की प्रसिद्ध कविता 'मत बाँटो इनसान को' पढ़िए–

मंदिर मस्जिद गिरजाघर ने,
बाँट लिया भगवान को।
धरती बाँटी, सागर बाँटा,
मत बाँटो इनसान को।।

श्रवण-कौशल का विकास Listening Skills

शिक्षक/शिक्षिका बच्चों को ऑनलाइन सहायता के अंतर्गत दी गई कविता 'मेरी अभिलाषा' सुनाएँ और बच्चों से निम्नलिखित प्रश्न पूछें–

1. कविता में क्या-क्या करने के लिए प्रेरित किया गया है?
2. कविता में पक्षियों के समान चहकने तथा कूकने के लिए क्यों कहा गया है?
3. बालमन की क्या-क्या अभिलाषाएँ होती हैं?
4. 'फूलों के समान महकने' का क्या तात्पर्य है?
5. सूरज, तारों की तरह चमकने के लिए कवि क्यों कह रहे हैं?

वाचन-कौशल का विकास Speaking Skills

धरती पर कुछ समस्याएँ ऐसी हैं जिनका प्रभाव सभी लोगों पर समान रूप से पड़ता है; जैसे कि जल, वायु या ध्वनि प्रदूषण, बेरोज़गारी, बढ़ते अपराध इत्यादि। इन समस्याओं के 'कारण और समाधान' के विषय पर कक्षा में अपने विचार प्रस्तुत कीजिए।

जीवन-कौशल Life Skills

धनी-निर्धन, छोटे-बड़े, शिक्षित-अशिक्षित, जात-पाँत और धार्मिक विभेद के कारण मनुष्य-मनुष्य में सदियों से भेद-भाव चला आ रहा है। जब तक हम इन सब भेद-भाव से ऊपर नहीं उठेंगे, तब तक हम सच्चे मानव कहलाने के अधिकारी नहीं। अनेक महापुरुषों ने मानव-समाज में व्याप्त इन भेद-भाव रूपी कुरीतियों को दूर करने का प्रयास किया है। हमें भी अपने मन से सब प्रकार के भेद-भाव दूर करने होंगे। तो आइए, हम सब दोस्ती का हाथ बढ़ाएँ, स्वयं खुश रहें और दूसरों को भी खुश करें।

अभिवृत्ति एवं जीवन-मूल्य Attitude & Values

आप जानते हैं कि हमें एक-दूसरे की सहायता करनी चाहिए। इससे आपसी प्रेम बढ़ता है। साथ ही वह व्यक्ति भी आपके कुछ काम आने के लिए लालायित रहता है और अनचाहे ही मित्र बन जाता है। इसलिए हमेशा दूसरों की सहायता करनी चाहिए।

सभी महान लोगों ने, ज्ञानी महापुरुषों ने मानव की सेवा और सहायता को सबसे बड़ा धर्म माना है। घंटों पूजा-पाठ करने से ईश्वर प्रसन्न नहीं होते हैं, बल्कि दीन-दुखी जन की सेवा-सहायता करने से हमें ईश्वर का आशीर्वाद मिलता है। भूखे को भोजन देना, रोगी का उपचार करना, अशिक्षित को शिक्षित करने का प्रयास करना निश्चय ही अच्छे कर्म हैं। इन बातों को अपने जीवन में उतारने की चेष्टा करें।